(v) REPORTED MAL-TREATMENT OF HINDUS IN PAKISTAN

श्री सज्जन कुमार (बाह्य दिल्ली): उपाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार का ध्यान पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ दुर्व्यवहार किये जाने के प्रति आकर्षित करना चाहता हूं ।

23 अप्रैल 1982 को पाकिस्तान में हिन्दुओं के 40 मकानों को, 2 चावल मिलों को आग लगा दी गई तथा हिन्दुओं का एक मंदिर भी तहस नहस कर दिया गया ।

उपरोक्त समाचार 24-4-82 को सांध्य टाइम्स में तथा 25-4-82 के नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुआ है ।

इतना ही नहीं, पाकिस्तान सरकार हिन्दुओं को नये मंदिर बनाने की अनुमति भी नहीं देती। उन्हें सामान्य मानवीय अधिकारों से भी वंचित रखा जाता है ।

मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि इस मामले को पाकिस्तान सरकार के साथ गम्भीरता से उठाया जाय और हिन्दुओं के अधिकारों की रक्षा की जाय ।

मैं जानना चाहूंगा कि क्या सरकार ने इस घटना के सम्बन्ध में पाकिस्तान सरकार को विरोध पत्र भेजा है ? अगर भेजा है तो पाक सरकार की प्रतिक्रिया क्या है और नहीं भेजा है तो इस विलम्ब का क्या कारण है ?

यह खेद की बात है कि पाकिस्तान सरकार अल्पसंख्यकों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को नहीं निभा पा रही है। मेरा पुन: आग्रह है कि भारत सरकार पाकिस्तान के हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिए तुरन्त आवश्यक कार्यवाही करें ।

(vi) DEVELOPMENT OF SMALL SCALE INDUSTRY AND SETTING UP SOME MAJOR INDUSTRIES IN EASTERN UTTAR PRADESH

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री (सैदपुर): मैं आप के माध्यम से माननीय उद्योग मंत्री का ध्यान पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर, जौनपुर एवं दक्षिणी वाराणसी के अत्यन्त अविकसित इलाके की ओर ले जाना चाहता हूं ।

कई बार इस सदन में इस बात को कहा गया कि यह एक अत्यन्त अविकसित इलाका है । इस इलाके की जनसंख्या लगभग 40 लाख से अधिक है । यहां कोई उद्योग नहीं है । यहां के लोग मुख्यत: खेती और मजदूरी पर निर्भर हैं । लोग कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े शहरों में जा कर बड़ी मुश्किल से रोजी-रोटी कमाते हैं । बड़ी ही गरीबी में यहां के लोगों का जीवन गुजर रहा है । हर वर्ग का व्यक्ति परेशान है। इस क्षेत्र में बुनकरी, तार जाली, रंग, बीड़ी, ईंटा, खपरैल एवं दूध का खोवा आदि बनाने का कार्य होता रहा है ।

वर्तमान परिस्थितियां कुछ ऐसी बिगड़ गई कि अब ये धन्धे भी टूट चुके हैं । लघु उद्योग धन्धे भी एकदम समाप्त हो गये । किसान, मजदूर सभी परेशान हैं। ऊंचे एवं गरीब तबके के अधिकांश युवक शहरों में आटो रिक्शा टैक्सी चलाने को मजबूर हैं।

बेकारी में निरन्तर अपराध बढ़ रहे हैं । आदमी एकदम मायूस हो गया है। किसी किस्म का कोई साधन नहीं रह गया है । पिछले 3-4 वर्षों से कृषि की उपज भी प्राकृतिक आपदा से बहुत ही खराब हुई । कभी बाढ़, कभी सूखे में वहां निरन्तर तबाही होती रही ।

इस विषम स्थिति में लाखों गरीबों का जीवन संकट में है । एक वृहद खाद का कारखाना लगाए जाने की बात से कुछ लोगों की आशाएं जगीं पर वह भी लोप हो गया। आम आदमी की दृष्टि सरकार की ओर लगी है । सभी लोग बराबर सोच रहे हैं कि सरकार जीने का सहारा देगी पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई

अत: इस विषम परिस्थिति में समस्त पूर्वांचल के लोगों के सामने घोर संकट है। मैं माननीय उद्योग मंत्री से इस संदर्भ में आग्रह करूंगा कि वे उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश देने की कृपा करें कि तुरन्त इस क्षेत्र में लघु उद्योगों का विकास किया जाय । साथ ही केन्द्र सरकार की

[श्री रामनाथ सोनकर शास्त्री]

ओर से बाँसडिहार, रंदपुर, कोराकत, चन्दवक, जलालपुर, मुफ्तीगंज या गौराबादशाहपुर कहीं भी कोई भी बड़ा उद्योग लगाया जाए।

स्मरण रहे कि इस पिछड़े क्षेत्र में कागज का उद्योग, सूती मिल या वृहद हरी फैक्ट्री लगा कर अच्छी सफलता प्राप्त की जा सकती है। यहां की समस्त जनता की नाजुक आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता है। लाखों बेरोजगार शिक्षित युवकों को एवं कमजोर तबके के स्त्री पुरुषों को रक्षा यहां करनी अत्यन्त आवश्यक है।

(vii) NEED TO ACCORD DUE RECOGNITION TO THE ACHIEVEMENTS OF INDIAN SCIENTISTS

SHRI A. K. ROY (Dhanbad): I would like to raise the following matter under Rule 377.

The achievement of the Indian scientists, even having great theoretical and techno-economic significance do not get due publicity and hence, national recognition, acting as great disincentives for them. One such specific case deserving immediate mentioning in the House is the discovery of the Indian scientists led by Prof. S. N. Sarkar of Indian School of Mines, Dhanbad about the oldest rock of the world.

While the age of the earth is estimated to be 4,600 million years, the oldest rocks so far known (3,800 in years old) have been found in Greenland only. Recently, the scientists of Indian School of Mines (Dhanbad, Presidency College (Calcutta) and Rochester University (New York) have found equally old rook, (granitic rocks called tonalites) in the Champua-Onlajari area, of Keonjhar district in Orissa, with an indication that even older rocks exist in the region of the age of 40,000 million years.

A report of this study has recently been published in 'Science', a renowned U.S. Scientific Journal creating a great sensation amongst the Geo-Scientists of the world with far-reaching scientific and technoeconomic significance.

It may be further noted that for establishing the age of the older metamorphic group granitic and tonalitic rocks of Keonjhar, high precision Samarium neodymium isotopic—dating method was used which provided for the first time some direct evidence that parts of the earth's mantle *i.e.*, middle layer below the earth's crust were differentiated earlier than 3,800 million years ago to produce the earliest granitic crust. The age of the Keonjhar rock has been estimated to be about 4,000 million years old and stands as the oldest granitic crust on the earth surface. According to the finding, such rocks cover an area of about 10,000 sq. km. and also some part of Singhbhum district of Bihar.

While much attention has been drawn by the INSAT 1A to the mysteries of the upper atmosphere, these silent discoveries about the mysteries of the mother earth should not be lost sight of and the Department of Science and Technology should examine the implications of this discovery of the oldest rock of the world in India and should come out in the House with a statement to this effect and congratulating the Geoscientists of the country.

(viii) SUPPLY OF FOODGRAINS TO TRIPURA.

SHRI AJOY BISWAS (Tripura West): In 1981 the total allotment of rice to Tripura was 81,000 tonnes, but the FCI delivered to the State Government only 46,428 tonnes. The Railways planned to place 52 rakes for carrying essential commodities to Tripura, but the Railways ultimately cancelled 20 rakes last year resulting in serious food shortage in Tripura. This year out of a total allotment of 32,000 tonnes, only 21,807 tonnes have been delivered by the FCI so far. It would appear that the overall stock position of rice with the FCI as well as with the State Government as on date is alarmingly low, and it would be difficult to cater to the increased demand of rice through public distribution system during the lean months ahead, unless adequate quantity of rice is rushed by FCI to Tripura forthwith in consonance with the estimated requirement, as projected by the State Government, well